भाग – 2
वचन के बारे मे परमेश्वर का
वचन क्या सिखाता है।

अध्याय 8

पवित्र लेख

1.<u>पवित्र लेख परमेश्वर की ओर से आया</u> :–
केवल बाईबल ही एक लिखा हुआ परमेश्वर का वचन है जो मनुष्य के पास है। सब किताबों में सर्व श्रेष्ठ पुस्तक पवित्र शास्त्र, न केवल परमेश्वर के वचन से परिपुर्ण है, परन्तु यह परमेश्वर का वचन है। इसमे सारा परमेश्वर का पवित्र लेख है। बाइबल मे 66 भिन्न – भिन्न किताबे है।
39 पुराने नियम में है और
27 नये नियम है।

परमेश्वर ने करीब चालीस भिन्न – भिन्न मनुष्य को यह लिखने का काम दिया जो वो चाहता था वे लिखें। पहली किताबें करीबन यीशु के 1500 साल पहले लिखी कई और आखरी यीशु के मरने के 100 साल बाद लिखी गई। आदी से अंत तक 1600 साल लगे। 2 पतरस 1:20–21 में लिखा है "पर पहले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भविष्यवाणी किसी की अपनी ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नही होती।"

पवित्र लेख बहुत साल पहले लिखा गया था। तभी भी यह लेख सब मनुष्य के लिये और हर युग के लिये लिखा गया। और कोई लेख परमेश्वर की ओर से देने की आवश्यकता नही पडी क्योंकी वह लेख पूर्ण थे। परमेश्वर के वचन में वह सब दिया है। जो मनुष्य परमेश्वर, प्रभु यीशु मसीह और पवित्र आत्मा के बारे में जानना चाहता है, पापी को परमेश्वर के पुत्र कैसे बनना, जीवन मे शान्ती होना, और मृत्यु के बाद जीवन। परमेश्वर ने अपना वचन लिखित में दिया है, वह कभी नष्ट नहीं हो सकता। मत्ती 24:35 में लिखा है "आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे; परन्तु मेरी बाते कभी न टलेगी"।

2.<u>पवित्र लेख दो भागों में है</u> :–
1. पुराना नियम
2. नया नियम

'नियम' शब्द का अर्थ है कि परमेश्वर ने अपने लोगों के लिये कुछ करने का वादा किया है। बाद में, यह शब्द का अर्थ यह निकला 'वह किताब जिसमें सब वादे है। परमेश्वर सदा चाहता था की उसके लोग उसको दण्डवत करें। पुराने नियम को कहा जा सकता है 'पुराने तरीके से आराधना करना'। यही नये नियम के लिये भी है। इसे आराधना करने का नया रूप कहा जा सकता है। क्योंकि दोनो ही अलग रूप है आराधना के। पहला या पुराना तरीका अराधना का नियमों और उसुलों के आधार पर था, और जानवरों और दूसरी वस्तुओं को चढाने का आराधना का एक रूप था। नये आराधना के तरीके में, यीशु मसीह को दे दिया गया। वह परमेश्वर की पूर्ण भेट थी। यीशु मसीह ही एक है जिसने पुराने नियमों का पालन किया। जब मनुष्य मसीह पर अपना भरोसा रखता है, वह परमेश्वर की सच्ची आराधना करता है। इब्री 9:1–1

<u>पिछले अंक के सवालों के जवाब</u>

१)पीशोन,गीहोन,हिददकेल,फरात (उत्पति 2:11–14), २)टिडडीया और वनमधु(मरकुस1:6) ३)मोआब(रुत 1:4), ४)११० वर्ष, ५)६०० वर्ष, ६)निम्रोद (उत्पति 10:8), ७)हानोक और एलीयाह (२ राजा 2:11), ८)दो भाई(नाहोर, हारान)(उत्पति 12:27), ९)आदम और हवा १०)हानोक और एलीयाह

DISCIPLESHIP TRAINING CENTRE

Acts Foundation, Potter's House Church ,3rd Lane, Madhuban, Sangvi Pune- 27 Ph. 9850833779 ;contact@actsministry.in

बाइबल सिद्धान्त / Bible Doctrine

अंक:5 *Course-2* *Aug 2009* मुल्य:10 रू.

.....पिछले अंक का शेष भाग

भाग–1

परमेश्वर का वचन परमेश्वर के बारे मे क्या सिखाता है।

अध्याय 6

त्रिएक परमेश्वर

त्रिएक परमेश्वर का अर्थ है तीन व्यक्तियों में एक परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। यह समझना मुश्किल है परन्तु परमेश्वर का वचन हमें तीन व्यक्तियों में एक ही परमेश्वर के बारे में बताता है। उससे मदद होगी। एक बडा समूह लोगों का जो एक साथ मिलता है उसे 'समुह' केहते हैं। कुछ अंगुर एक साथ होते हैं उन्हे 'गुच्छा' कहते हैं। पति और पत्नी एक है। मत्ती 19:5 मे लिखा है " इस कारण मनुष्य अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे।

मत्ती 3'16–17 में तीन अलग अलग व्यक्ति के बारे में बताया गया है। " जब यीशु पानी से बाहर आया, तब आसमान खुला। उसने परमेश्वर की आत्मा को कबूतर के रूप में नीचे आते और यीशु के ऊपर आते देखा।" और देखो, यह आकाशवाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।" ' पिता आसमान से बोलता है, पुत्र यरदन नदी में बपतिस्मा पाता है, और पवित्र आत्मा कबूतर की नायी पुत्र के ऊपर आता है। मत्ती 28:19 में यीशु मसीह अपने चेलों को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा मे बपतिस्मा देने को केहता है।

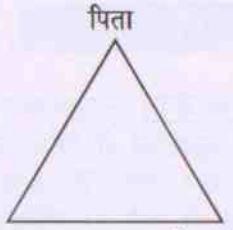

तीन व्यक्तियों में एकही परमेश्वर है।

पौलुस कुरिन्थियों के मसीह को 2 कुरिन्थियों 13:14 में यह लिखकर अपने पत्र को समाप्त करता है कि " प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह, परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ बनी रहे।" युहन्ना 14:16अ में लिखा है "मै पिता से प्रार्थना करूंगा, ओर वह तुम्हें एक 'सहायक' देगा" यीशु पिता से पवित्र आत्मा की मॉग कर रहा है। रोमियों 1:7 पिता के परमेश्वर होने का वर्णन करता है, इब्रानीयों 1:8 में पुत्र का परमेश्वर होने का, और प्रेरितों 5:3–4 में पवित्र आत्मा का परमेश्वर होने का। तीनों व्यक्ति न तो एक दुसरे से उँचे है और न ही कम है, और उन में कभी कोई अन्तर नही हो सकता है। इसे इस प्रकार समझने मे सहायता होगी :– पिता परमेश्वर है, त्रिएक परमेश्वर का एक हिस्सा, जिसे हम देख नही सकते। युहन्ना 1:18 पुत्र परमेश्वर है, त्रिएक परमेश्वर का वो एक हिस्सा जो मानव रूप धारण करके इस दुनिया में पापी मनुष्य के लिये स्वर्ग को

यूहन्ना 1:14–16 पवित्र आत्मा परमेश्वर है, त्रिएक परमेश्वर का वो हिस्सा जो मनुष्य के भीतर काम करता है। 1 कुरिन्थियों 2:10

भाग – 1

परमेश्वर का वचन परमेश्वर के बारे मे क्या सिखाता है।

अध्याय 7

परमेश्वर के काम

परमेश्वर के काम :– परमेश्वर के वो काम जो उसने भूतकाल में किये, जो वर्तमान काल में कर रहा है, और जो वह भविष्यकाल में करेगा। रोमियों 1:20 में लिखा है "परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते रहे है, यहां तक कि मनुष्य निरूत्तर है।" उसके कामों को जानना उसके तरीकों को जानना, एक समान नहीं है। उसके कामों के बारे में जानना उसके जानने वालों से प्रगट हो सकता है। " उसने अपने काम मूसा और इस्त्राएलियों पर दर्शाये।" परमेश्वर के कार्य उसकी योजनाओं को दर्शाता है जो उसने युगानुयुग के लिये किये है। 1 तीमुथियों 1:17 मे लिखा है "अब सनातन राजा अर्थात् अविनाशी, अनदेखे, अद्वैत परमेश्वर का आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे।" इफिसियों 1:11 मे लिखा है "उसी में जिस में हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है।" यह देखा जाता है कि किस प्रकार सब चीजें परमेश्वर की योजना के अनुसार कार्य करती है। परमश्वर अपने योजनाओं के अनुसार ही कार्य करता है। इफिसियों 3:11

1.परमेश्वर ने सब कुछ बनाया :– प्रकृति' शब्द हम कई वचन में देखते है। इसका अर्थ है की त्रिएक परमेश्वर का कार्य जो उसने शुरू से अपने महिमा के लिये बनाया, बिना किसी वस्तु का उपयोग कीये हुए। उत्पत्ति 1:1–2; यूहन्ना 1:1–3

2.यह देखा जा सकता है की हर एक कार्य त्रिएक परमेश्वर द्वारा हुये :–

1.परमेश्वर पिता ही है जिसने सब की योजना की और उनका प्रारम्भ किया। इफिसियों 3:9 मे लिखा है " मै सब पर यह बात प्रकाशित करू कि उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सब के सृष्टिकर्ता परमेश्वर में आदि से गुप्त था।"उत्पत्ति 1:1; व्यवस्थाविवरण 4:39; 1 कुरिन्थियों 8:6; 2 कुरिन्थि 4:6

2.परमेश्वर के पुत्र ने ही सब को संसार में लाया :– कुलुस्सियों 1:16 मे लिखा है " क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई।" युहन्ना 1:1–3; 1 कुरिन्थि 8:6; इब्रानि 1:2, 11:3

3.परमेश्वर की आत्मा ने सब का अन्त किया :– उत्पत्ति 1:2; अय्युब 26:13, 33:4

यह इस प्रकार माना जा सकता है:– जब एक घर बनाया जाता है, उसके बारें में सोचा जाता है की उसे किस प्रकार बनाया जाए। एक स्मारक को बनाता है और दुसरा उसे अन्दर से पूरा करता है। हर एक का उसमें एक हिस्सा होता है। इसे हम उत्पत्ति 1:1–3 में देखते है। पहले वचन में परमेश्वर पिता, दुसरे वचन में आत्मा, और तीसरे वचन में परमेश्वर का पुत्र। परमेश्वर ने न केवल दिखने वाली चीजें बनाई परन्तु न दिखने वाली भी बनाई। उसने फरिश्तों की दुनिया बनाई जैसे की कुलुस्सियों 1:16 मे लिखा है " क्योकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई" सृष्टि शब्द उत्पत्ति 1 में इब्री भाषा में तीनबार आया है। पहले वचन में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी बनाई। 21 आयत में उसने जानवर बनाए, 26 वचन में उसने मनुष्य जाती बनाई। मनुष्य को हमेशा से ही यह जानने की इच्छा रही है की परमेश्वर ने कैसे यह सब बनाया, परन्तु परमेश्वर ने यह सब गुप्त रखा। कुछ लोग ऐसा गलत सोचते हैं कि जो कुछ परमेश्वर ने सृष्टि की वही परमेश्वर है। परमेश्वर को इन बनाई हुई चीजों मे पूजना नही चाहिये। यह सब बातें साबित करती है कि सर्व शक्तिमान परमेश्वर ने इनको बनाया है। सवाल यह पुछा जाता है कि क्यों परमेश्वर ने कुछ नही से बनाया ?केवल एक ही उत्तर है। परमेश्वर ने अपने चमकते जलाल के लिये बनाया, जैसा की वह चाहता था और उनका उपयोग करना। प्राकाशितवाक्य 4:11; नहेम्याह 9:6; रोमियों 11:36; इफि 1:5

3.परमेश्वर अपनी सृजी गई चीजों को संभालता और रखता है :– कुलुस्सियों 1:17 मे लिखा है "वही सब वस्तुंओं मे प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती है।" कुछ लोग यह समझ बैठे है की परमेश्वर ने सब बनाने के बाद उनको खुद से चलने के लिये छोड दिया है। इब्री 1:3 में लिखा है " वह सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है।" यह मसीह यीशु के हाथ में है की सब कुछ एक साथ हो और सही प्रकार से चले। यीशु ने बताया किस प्रकार आकाश में उडनेवाले पंछी और खेतो में उगनेवाले फूल परमेश्वर की देख रेख में है। अगर वह उनको संभाल सकता है, तो मनुष्य को कितना संभालता है। मत्ती 5:45; 6:26; 10:29–31

परमेश्वर ने अपने वचन में दिखाया की उसने क्या बनाया और उन्हे वो वैसा ही रखता है जैसा वो चाहता है।

1.पृथ्वी, सूरज, चॉद और तारे उसी प्रकार है जिस प्रकार उसने उनकी योजना की भजनसहिता 119:89–91

2.सब दुनिया के देश वही हैं जहॉ परमेश्वर ने उनको रखा है, या वहॉ जहॉ वो उनको चाहता है। प्ररितों 17:26 में लिखा है "उस ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सम्पुर्ण पृथ्वी पर रहने के लिए बनाई है।" व्यवस्थाविवरण 32:8

3.मनुष्य के जीवन की लम्बाई परमेश्वर की योजना के अनुसार है अय्युब 14:5 मे लिखा है " मनुष्य के दिन नियुक्त किए गए है।"

4.मनुष्य के अच्छे और बुरे काम निरधारित किए गये है। लुका 22:22 में लिखा है "मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके लिए ठहराया गया जाता ही है; पर हाय उस मनुष्य पर, जिसके द्वारा वह पकडवाया जाता है।" प्ररितों 4:27–28; इफि 2:10; 1 पतरस 2:8; प्रकाशित 17:17

5.मनुष्य का पापी को सजा से बचाना परमेश्वर के योजना के अनुसार है। यशायाह 53:5;रोमियों 8:29–30;इफि 1:3,10,11

Announcement: There will be a Special "Praise & Worship Night" On 23rd of August' 09 at 7:00p.m. onwards